बच्चे स्कूल क्यों नहीं जाना चाहते

कारण, विश्लेषण और सुधार की ओर एक कदम

लेखक: मोहम्मद मुजीब

दिल्ली • 21 अगस्त 2026

अध्याय एक: क्या स्कूल ज़रूरी है?

स्कूल केवल किताबें पढ़ाने की जगह नहीं है, बल्कि एक ऐसी संस्था है जो बच्चे के व्यक्तित्व निर्माण, सामाजिक कौशल, अनुशासन और भविष्य की तैयारी में बुनियादी भूमिका निभाती है। नियमित शिक्षा बच्चों को ज्ञान के साथ-साथ समय की पाबंदी, टीम वर्क और समस्याओं को हल करने की क्षमता भी सिखाती है।

स्कूल के महत्व के कुछ पहलू

- शैक्षणिक विकास — बुनियादी विषयों के साथ-साथ विश्लेषणात्मक और आलोचनात्मक सोच की क्षमता विकसित होती है।
- सामाजिक कौशल — हमउम्र बच्चों के साथ मेलजोल, दोस्ती, सहयोग और प्रतिस्पर्धा की समझ पैदा होती है।
- अनुशासन — समय की पाबंदी, ज़िम्मेदारी और नियमों का पालन जैसी आदतें विकसित होती हैं।
- भविष्य की तैयारी — उच्च शिक्षा और रोज़गार के अवसरों के लिए बुनियाद तैयार होती है।
- आत्मविश्वास — सफलताओं और असफलताओं दोनों से निपटना सीखकर बच्चे में आत्मविश्वास पैदा होता है।

इस महत्व के बावजूद, यह सवाल भी उतना ही ज़रूरी है कि क्या मौजूदा स्कूल वास्तव में इस उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं, या केवल एक पुराने ढाँचे के रूप में चल रहे हैं। अगले अध्याय में इसी सवाल का आलोचनात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

अध्याय दो: क्या स्कूल समकालीन शिक्षा का माहौल देता है? एक आलोचनात्मक दृष्टिकोण

कई शिक्षा प्रणालियाँ आज भी औद्योगिक युग के पुराने ढाँचे पर टिकी हैं — एक जैसा पाठ्यक्रम, रटने की प्रणाली, और परीक्षा-आधारित मूल्यांकन — जो इक्कीसवीं सदी की ज़रूरतों से मेल नहीं खाते।

प्रमुख कमियाँ

- एक जैसा पाठ्यक्रम — हर बच्चे की क्षमता, गति और रुचि अलग होती है, फिर भी पाठ्यक्रम सबके लिए एक जैसा होता है।
- रटने की प्रणाली — रचनात्मक और आलोचनात्मक सोच के बजाय याददाश्त पर ज़ोर दिया जाता है।
- परीक्षा-आधारित मूल्यांकन — बच्चे की समग्र क्षमता के बजाय केवल कागज़ी परीक्षा में प्रदर्शन को मानक बनाया जाता है।
- व्यावहारिक और कौशल-आधारित शिक्षा की कमी — जीवन कौशल (वित्त, संचार, तकनीक) अक्सर पाठ्यक्रम से गायब होते हैं।
- तकनीक का सीमित उपयोग — कई स्कूल आधुनिक तकनीक को शिक्षण प्रक्रिया का प्रभावी हिस्सा नहीं बना पाते।

दूसरी ओर, कुछ स्कूल आधुनिक शिक्षण विधियों, प्रोजेक्ट-आधारित शिक्षा, और बच्चे की व्यक्तिगत क्षमता को ध्यान में रखते हुए शिक्षा दे रहे हैं। फिर भी, ये अभी भी बहुमत के बजाय अपवाद हैं। इस अंतर को समझना ज़रूरी है ताकि व्यावहारिक समाधान खोजे जा सकें।

अध्याय तीन: स्कूल से बचने के कारण

जब बच्चे स्कूल जाने से कतराते हैं, तो इसके पीछे अक्सर कई गहरे कारण होते हैं, जिन्हें समझना ज़रूरी है:

- शैक्षणिक दबाव — परीक्षाएँ, नंबरों की दौड़ और माता-पिता की ऊँची उम्मीदों का बोझ।
- बुलीइंग (धौंस-धमकी) — सहपाठियों या कभी-कभी शिक्षकों द्वारा तंग किया जाना।
- सीखने में कठिनाई — डिस्लेक्सिया या अन्य शैक्षणिक समस्याएँ जिनकी समय पर पहचान और मदद नहीं मिलती।
- सख्त या डरावना माहौल — सज़ा का डर, सख्त शिक्षक, या अमैत्रीपूर्ण व्यवहार।
- रुचि की कमी — पाठचक्रम का उबाऊ या अप्रासंगिक होना, जिससे बच्चे का ध्यान और शौक खत्म हो जाता है।
- सामाजिक व भावनात्मक समस्याएँ — दोस्ती न बन पाना, अकेलापन, या आत्मविश्वास की कमी।
- घरेलू हालात — घर में आर्थिक तंगी, पारिवारिक तनाव, या बच्चे से काम करवाने का दबाव।
- मानसिक स्वास्थ्य समस्याएँ — चिंता, तनाव या अवसाद जैसी स्थितियाँ जिन्हें अक्सर नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है।

ये कारण अक्सर एक-दूसरे से जुडे होते हैं, और यदि समय पर ध्यान न दिया जाए तो बच्चा पूरी तरह से शिक्षा से दूर हो सकता है।

अध्याय चार: मौजूदा माहौल में सुधार के लिए महत्वपूर्ण कदम

स्कूल के माहौल को बेहतर बनाने के लिए ठोस और व्यावहारिक कदमों की ज़रूरत है, जिनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं:

- पाठ्यक्रम में लचीलापन — हर बच्चे की क्षमता और रुचि के अनुसार चुनाव की गुंजाइश रखना।
- शिक्षकों का प्रशिक्षण — आधुनिक शिक्षण विधियों और बाल मनोविज्ञान को समझने का प्रशिक्षण देना।
- सकारात्मक अनुशासन — सज़ा के बजाय मार्गदर्शन और संवाद पर आधारित अनुशासन अपनाना।
- बुलीइंग-रोधी नीति — स्पष्ट और प्रभावी प्रक्रिया जिससे बच्चे सुरक्षित महसूस करें।
- परामर्श सेवाएँ — स्कूल में काउंसलर की मौजूदगी ताकि भावनात्मक व मानसिक समस्याएँ समय पर हल हो सकें।
- व्यावहारिक व कौशल शिक्षा — जीवन कौशल, तकनीक और रचनात्मक गतिविधियों को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना।
- मूल्यांकन के वैकल्पिक तरीके — केवल परीक्षा के बजाय प्रोजेक्ट, प्रस्तुतियाँ और निरंतर मूल्यांकन को भी शामिल करना।
- माता-पिता और स्कूल के बीच संपर्क — नियमित बातचीत ताकि बच्चे की समस्याएँ जल्दी सामने आ सकें।

इन कदमों को अलग-अलग लागू करने के बजाय एक समग्र रणनीति के रूप में अपनाया जाए तो ये अधिक प्रभावी साबित हो सकते हैं।

अध्याय पाँच: स्कूल के माहौल में सभी भागीदारों की भूमिका

बच्चे के लिए स्वस्थ शैक्षणिक माहौल बनाना केवल स्कूल की नहीं, बल्कि कई पक्षों की साझा ज़िम्मेदारी है।

माता-पिता की भूमिका

- बच्चे की बात सुनना और उसकी भावनाओं को गंभीरता से लेना।
- केवल नंबरों के बजाय समग्र विकास पर ध्यान देना।
- स्कूल के साथ नियमित संपर्क बनाए रखना।

शिक्षकों की भूमिका

- हर बच्चे की व्यक्तिगत ज़रूरतों को समझना और प्रोत्साहित करना।
- सख्त व्यवहार के बजाय भरोसे और जुड़ाव पर आधारित माहौल बनाना।

स्कूल प्रशासन की भूमिका

- नीतियों को केवल कागज़ पर नहीं बल्कि व्यावहारिक रूप से लागू करना।
- सुरक्षित, स्वच्छ और सुखद माहौल की व्यवस्था करना।

विद्यार्थियों की भूमिका

- एक-दूसरे के साथ सहानुभूति और सहयोग का रवैया अपनाना।
- अपनी परेशानियाँ बिना झिझक बड़ों के साथ साझा करना।

सरकार और समाज की भूमिका

- शिक्षा नीतियों को ज़मीनी हकीकत के अनुसार ढालना और संसाधन उपलब्ध कराना।
- शिक्षकों के प्रशिक्षण और स्कूलों की गुणवत्ता की निगरानी करना।

जब ये सभी पक्ष एक-दूसरे पर दोष मढ़ने के बजाय मिलकर सहयोग से काम करें, तभी वास्तविक बदलाव संभव है।

अध्याय छह: नैतिक शिक्षा का महत्व और आवश्यकता

शैक्षणिक कौशल के साथ-साथ नैतिक प्रशिक्षण भी उतना ही ज़रूरी है, बल्कि कभी-कभी उससे भी ज़्यादा महत्वपूर्ण, क्योंकि चरित्र ही वह आधार है जिस पर ज्ञान का सही उपयोग टिका होता है।

नैतिक शिक्षा क्यों ज़रूरी है

- सच्चाई, ईमानदारी और ज़िम्मेदारी जैसे मूल्य बच्चे को एक बेहतर इंसान बनने में मदद करते हैं।
- सहानुभूति और सहनशीलता की समझ सामाजिक सद्भाव और बेहतर रिश्तों को बढ़ावा देती है।
- नैतिक आधार रखने वाले बच्चे दबाव और गलत संगति में भी सही फैसले लेने में सक्षम होते हैं।
- केवल शैक्षणिक योग्यता, चरित्र के बिना, कभी-कभी समाज के लिए हानिकारक भी साबित हो सकती है।

व्यावहारिक सुझाव

- पाठ्यक्रम में नैतिकता और नागरिक ज़िम्मेदारी से जुड़े विषय शामिल करना।
- शिक्षकों और माता-पिता का अपने आचरण से उदाहरण स्थापित करना, क्योंकि बच्चे बातों से ज़्यादा आचरण से सीखते हैं।
- कहानियों, चर्चाओं और वास्तविक जीवन के उदाहरणों के ज़रिए नैतिक अवधारणाओं को समझाना।
- बच्चों को दूसरों की मदद और स्वैच्छिक कार्यों में शामिल करना ताकि सहानुभूति व्यावहारिक रूप ले सके।

जब ज्ञान और नैतिकता साथ-साथ विकसित हों, तो स्कूल केवल डिग्री देने वाली संस्था नहीं रह जाता, बल्कि एक ऐसा माहौल बन जाता है जहाँ बच्चा वास्तव में एक बेहतर इंसान बनकर निकलता है — और यही वह स्कूल है जहाँ बच्चा खुशी से जाना चाहेगा।

लेखक: मोहम्मद मुजीब

21 अगस्त 2026

दिल्ली